उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय आठ

युगांतशास्त्र का विकास

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:32) 4

II. मूसा का युगांतशास्त्र (2:01) 4

A. वाचाई चक्र (2:42) 4

B. वाचायी पराकाष्ठा (3:30) 4

III. आरंभिक भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र (7:38) 5

A. मूसा के साथ समानताएं (8:19) 6

B. मूसा के अतिरिक्त बातें (10:20) 6

1. राजतंत्र *(10:50)* *7*

2. मन्दिर *(12:38)* *7*

3. गैरयहूदी *(14:16)* *8*

IV. बाद के भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र (18:53) 9

A. यिर्मयाह की अपेक्षा (19:37) 9

B. दानिय्येल की अन्तर्दृष्टि (21:15) 10

C. अंतिम दृष्टिकोण (25:07) 11

1. आरंभिक आशाएं *(25:42)* *11*

2. अंतिम आशीषें *(26:45)* *12*

V. नए नियम का युगांतशास्त्र (28:46) 12

A. शब्द (29:36) 13

1. सुसमाचार *(29:54)* *13*

2. राज्य *(32:25)* *13*

3. बाद के दिन *(33:32)* *14*

B. संरचना (34:34) 14

1. यूहन्ना बपतिस्मादाता *(34:55)* *14*

2. यीशु *(35:45)* *15*

C. विषय (37:30) 16

1. बंधुआई *(37:50)* *16*

2. पुनर्स्थापना *(39:24)* *16*

VI. निष्कर्ष (42:24) 17

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 18

उपयोग के प्रश्न 24

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:32)

II. मूसा का युगांतशास्त्र (2:01)

मूसा ने इस्राएल को बताया था :

- कठिन समय आने वाले हैं : प्रतिज्ञा की भूमि से बंधुआई में जाना
- युगांत या अंत समय की आशा : एक दिन सब कुछ बेहतर हो जाएगा

A. वाचाई चक्र (2:42)

दण्ड और आशीष के चक्र परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंध की विशेषता बनेंगे।

B. वाचायी पराकाष्ठा (3:30)

मूसा ने भविष्य में एक निश्चित अंत या मंजिल को देखा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जैसे-जैसे इस्राएल परमेश्वर से दूर होता जाएगा तो दण्ड भी बढ़ता जाएगा।

परमेश्वर अपने लोगों पर दया करेगा और अकल्पनीय वाचायी आशीषों को स्थाई रूप में पाने के लिए उन्हें उनकी भूमि पर लौटा ले आएगा।

तकनीकी प्रयोग में "अंत के दिन" का अर्थ है "इतिहास की पूर्णता"।

तब बाद के दिनों में उन्हें प्रतिज्ञा की भूमि में लाया जाएगा और वे अद्‌भुत आशीषों को प्राप्त करेंगे।

III. आरंभिक भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र (7:38)

दानिय्येल के समय तक के भविष्यवक्ताओं के पास युगांतसंबंधी एक आधारभूत दृष्टिकोण था जो मूसा के दृष्टिकोण से बहुत मिलता जुलता था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. मूसा के साथ समानताएं (8:19)

परमेश्वर अलौकिक रूप से बंधुआई में अपने बचे हुए लोगों को नया जीवन देगा और उन्हें क्षमा प्रदान करेगा।

आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने उनमें हृदय-परिवर्तन की अपेक्षा की जिन्हें बंधुआई में ले जाया गया था।

आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने स्पष्ट कर दिया कि मूसा का आधारभूत युगांतशास्त्र सही था।

B. मूसा के अतिरिक्त बातें (10:20)

एक मुख्य वाचायी घटना मूसा और आरंभिक भविष्यवक्ताओं के बीच घटी : दाऊद के साथ की गई राजशाही वाचा

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. राजतंत्र (10:50)

परमेश्वर के दण्ड में दाऊद के सिंहासन से अलग होना भी शामिल होगा।

बंधुआई के बाद इस्राएल की पुनर्स्थापना में दाऊद के सिंहासन को महिमान्वित करना भी शामिल होगा।

2. मन्दिर (12:38)

अनेक इस्राएलियों ने भ्रांतिपूर्वक यह मान लिया था कि यरूशलेम में परमेश्वर का मन्दिर अलंघ्य था।

परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट किया जाएगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

भविष्यवक्ताओं ने यह भी प्रतिज्ञा की कि बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना के समय में एक महिमामय मन्दिर की पुनर्स्थापना की जाएगी।

3. गैरयहूदी (14:16)

इस्राएल की बंधुआई के दौरान गैरयहूदियों को परमेश्वर के लोगों पर विजय प्रदान की जाएगी।

वाचा के लोग अपने पापों के कारण परमेश्वर के शत्रु बन गए थे।

"यहोवा का दिन"

- यहोवा एक ही दिन में अपने सारे शत्रुओं को नाश करने में सक्षम है
- परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध दण्ड जब वे उसके शत्रु बन गए
- एक बड़ा युद्ध होगा तब परमेश्वर के लोग अपनी भूमि में पुनर्स्थापित होंगे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना में :

- परमेश्वर की आशीषें इस्राएल पर उंडेली जाएंगी।

- इन आशीषों में अनगिनत गैरयहूदियों का सच्चे विश्वास में जुड़ना भी शामिल होगा।

- परमेश्वर के वाचायी लोग सारी पृथ्वी में भर जाएंगे।

IV. बाद के भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र (18:53)

परमेश्वर के लोगों की प्रतिक्रियाओं का उन रूपों पर बड़ा प्रभाव पड़ा जिनमें बाद के दिन या अंत के दिन प्रदर्शित होंगे।

A. यिर्मयाह की अपेक्षा (19:37)

आरंभिक बाइबलीय भविष्यवाणी के प्रारूप का अनुसरण करते हुए यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि 70 वर्षों में बंधुआई समाप्त हो जाएगी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब जेरूब्बाबेल की अगुवाई में 539 ई.पू. में पहले समूह के लोग भूमि पर वापिस लौटे।

B. दानिय्येल की अन्तर्दृष्टि (21:15)

दानिय्येल अध्याय 9 में सत्तर सप्ताहों का प्रसिद्ध दर्शन।

इस्राएली बंधुआई में जा चुके थे, परन्तु उन्होंने अभी भी अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया था।

क्योंकि लोगों ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया था, इसलिए परमेश्वर ने बंधुआई की अवधि को सातगुणा बढ़ाने का निर्णय किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. अंतिम दृष्टिकोण (25:07)

पुराने नियम की भविष्यवाणी का अंतिम चरण :

- पुनर्स्थापना के समय में
- जब कुछ इस्राएली बंधुआई से छूटकर प्रतिज्ञा की भूमि पर लौट चुके थे

1. आरंभिक आशाएं (25:42)

इस्राएलियों के छोटे-छोटे समूह इस आशा के साथ अपनी भूमि पर लौटे कि वे परमेश्वर की आशीषों को बहुत ही शीघ्र परमेश्वर के पुनर्स्थापित लोगों पर देखेंगे।

हाग्गै और जकर्याह ने युगांतसबंधी चार आशाओं पर ध्यान दिया :

- दाऊद के सिंहासन की पुनर्स्थापना
- गैरयहूदी राष्ट्रों पर विजय
- मन्दिर की पुनर्स्थापना
- प्रकृति का नवीनीकरण

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. अंतिम आशीषें (26:45)

इस्राएल के लोग केवल बाहरी रूप से ही परमेश्वर की इच्छा की अनुपालना कर रहे थे।

- गैरयहूदी स्त्रियों के साथ विवाह
- व्यापक अधार्मिकता
- इस्राएल को मिलने वाली बड़ी आशीषों की आशाएं एक दूर भविष्य में ले जाई गईं

मलाकी :

- बाद के अन्य किसी भविष्यवक्ता से अधिक इस दूर की आशा पर ध्यान दिया।
- यरूशलेम में रहने वालों को डांटा।
- उन्हें चेतावनी दी कि दण्ड और आशीष का दिन भविष्य में आ रहा है।

V. नए नियम का युगांतशास्त्र (28:46)

नए नियम के लेखकों ने :

- पुराने नियम के भीतर ही युगांतशास्त्र के विकासों को समझा।
- इसमें यीशु की सेवकाई की वास्तविकता को जोड़ा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. शब्द (29:36)

1. सुसमाचार (29:54)

नए नियम के लेखक एक सौ से अधिक बार मसीह के मसीही संदेश को सुसमाचार या शुभ संदेश के रूप में कहते हैं।

शब्द "सुसमाचार" लिया गया है :

- पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं से
- इब्रानी शब्द *बासर* से जिसे प्रायः "शुभ संदेश" या "खुशी के संदेश" के रूप में अनुदित किया गया है।

यीशु बंधुआई से पुनर्स्थापना लाया।

2. राज्य (32:25)

नए नियम का युग राज्य का युग है — परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना और संसार के ऊपर उनकी विजय।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने घोषणा की कि उसमें पुनर्स्थापना आई है क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित हो रहा था।

3. बाद के दिन (33:32)

कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने शब्द-समूह "बाद के दिन" का प्रयोग बंधुआई के बाद के समय का वर्णन करने के लिए किया।

नए नियम के लेखक बार-बार नए नियम के सारे समय को इस प्रकार दर्शाते हैं :

- "ऐस्खाटोन" या "बाद के दिनों" के रूप में
- भविष्यवाणिय अपेक्षाओं की पूर्णता के रूप में

B. संरचना (34:34)

1. यूहन्ना बपतिस्मादाता (34:55)

यूहन्ना ने विश्वास किया कि जब मसीहा आएगा तो वह एक ही बार में पूरा राज्य ले आएगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. यीशु (35:45)

यीशु ने अपनी सेवकाई का अधिकांश समय यह स्पष्ट करने में बिताया :

- ऐस्खाटोन या अंत समय ऐसे नहीं आने वाला जैसे यूहन्ना और अन्य लोगों ने अपेक्षा की थी।

- परमेश्वर ने धीरे-धीरे, समय लेकर पुनर्स्थापना को लाने का निर्णय किया है।

युगांतशास्त्र पर यीशु और उसके चेलों द्वारा सिखाए गए नए नियम के दृष्टिकोण को "शुरू हुए युगांत" के रूप में जाना जाता है।

- राज्य का आरंभ : मसीह का जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान, पिन्तेकुस्त और प्रेरितों की सेवकाइयां।

- राज्य की निरंतरता : जिसमें आज हम रहते हैं- मसीह के पहले आगमन के बाद परन्तु उसके द्वितीय आगमन से पहले।

- राज्य की पूर्णता : जब मसीह का पुनरागमन होगा, पुनर्स्थापना का संपूर्ण रूप।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. विषय (37:30)

1. बंधुआई (37:50)

- आरंभ : वाचायी लोगों के विरूद्ध दण्ड
- निरन्तरता :
    - गैरयहूदी मसीहियों के लिए आत्मिक बंधुआई
    - कलीसियाई अनुशासन, और निष्कासन
- पूर्णता : नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की आशीषों से दूर अनन्त दण्ड

2. पुनर्स्थापना (39:24)

- आरंभ :
    - यीशु दाऊद का पुत्र, राजा है।
    - यीशु मन्दिर है।
    - यीशु ने शैतान और मृत्यु की शक्ति को हराने के द्वारा अपने लोगों के लिए विजय को आरंभ किया।
    - यीशु ने पवित्र आत्मा को भेजा जो हमारी मीरास की पहली अदायगी है।
    - यीशु ने अपनी सेवकाई में अनगिनत शारीरिक चंगाईयां की।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- निरंतरता :
    - यीशु राजा के समान संसार पर शासन करता है
    - कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है।
    - कलीसिया के पास विजय हैं और बुराई के विरूद्ध आत्मिक युद्ध हैं।
    - पवित्र आत्मा कलीसिया में हमारी संपूर्ण मीरास की पहली अदायगी के रूप में कार्य करता रहता है।
    - मसीही प्रायः भौतिक चंगाई और दैवीय विधान के विशेष कार्यों को देखते हैं।
- पूर्णता :
    - यीशु का राजतंत्र सारे संसार में फैल जाएगा
    - परमेश्वर सारी नई सृष्टि को परमेश्वर के एक मन्दिर के रूप में ढ़ालेगा।
    - परमेश्वर के लोगों के लिए बुराई के ऊपर एक संपूर्ण विजय होगी।
    - परमेश्वर के लोग नई सृष्टि की अपनी संपूर्ण मीरास को प्राप्त करेंगे।
    - प्रकृति उद्धार की महिमा में पूरी तरह से नई होकर स्वर्गलोक के समान हो जाएगी।

VI. निष्कर्ष (42:24)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. आशीष और श्राप के उन चक्रों का वर्णन कीजिए जिसे मूसा ने परमेश्वर के लोगों के लिए पहले से ही देखा।

2. मूसा के उस दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए जिसमें वाचायी जीवन के तीन चरण परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के लिए अंत में बड़ी आशीषों में पूर्ण होंगे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किन रूपों में आरंभिक भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र मूसा के युगांतशास्त्र के समान है?

4. किन रूपों में आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने मूसा के युगांतशास्त्र में और बातों को भी जोड़ा?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. बंधुआई के समय के विषय में यिर्मयाह की आशा क्या थी, और यह किस प्रकार पूरी हुई?

6. बंधुआई और पुनर्स्थापना के विषय में दानिय्येल ने क्या अंतर्दृष्टि प्रदान की?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. पुनर्स्थापना के समय में बाद के भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र के अंतिम दृष्टिकोणों में आरंभिक और बाद की आशाएं क्या थीं, और वे कैसे भिन्न थीं?

8. नए नियम के इन शब्दों “सुसमाचार,” “राज्य,” और “बाद के दिन” का संक्षेप में वर्णन कीजिए, और स्पष्ट कीजिए कि वे परस्पर कैसे संबंधित हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. नए नियम के युग में राज्य की पुनर्स्थापना के तीन चरणों का वर्णन कीजिए।

10. राज्य के तीन चरणों में नया नियम किस प्रकार बंधुआई के विषय को देखता है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. राज्य के तीन चरणों में नया नियम किस प्रकार पुनर्स्थापना के विषय को देखता है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. वाचायी आशीषें और श्राप आज विश्वासियों पर कैसे लागू होते हैं?

2. आधुनिक कलीसिया का व्यवहार किस प्रकार भविष्य में राज्य के आगमन को प्रभावित कर सकता है?

3. क्या हुआ होता यदि पुराने नियम में परमेश्वर के लोग बंधुआई से पूर्व के दिनों में, बंधुआई के दिनों में और बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना में विश्वासयोग्य रहे होते?

4. स्पष्ट करें कि परमेश्वर के राज्य के लिए यूहन्ना बपतिस्मादाता की आशा उसके दिनों में आम बात क्यों थी?

5. यह जानकार आपको कैसा महसूस होता है कि यीशु पुराने नियम की पुनर्स्थापना की सभी प्रतिज्ञाओं को पूरी तरह से पूर्ण करेगा?

6. यह समझ कि आप परमेश्वर के राज्य की निरंतरता के समय में रह रहे हैं, आधुनिक मसीहियों द्वारा पवित्रशास्त्र को पढने और उसे अपने जीवनों में लागू करने को कैसे प्रभावित करनी चाहिए?

7. यदि हम इस अध्याय में सिखाए गए बाइबलीय युगांतशास्त्र की तस्वीर को स्वीकार कर लेते हैं तो परमेश्वर, स्वयं, गैरविश्वासियों और सृष्टि के बारे में हमारे दृष्टिकोण किस प्रकार बदल सकते हैं?

8. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org